10
JANUARY
Wednesday
2018

हिन्दी विभाग
डॉ० वनिता कुमारी सिंह

B.A, III

विषय – काव्य में अलंकारों का स्थान :—

मानव समाज सौंदर्योपासक है, उसकी उस प्रवृत्ति ने ही अलंकारों को जन्म दिया है। शरीर की सौंदर्यता को बढ़ाने के लिए जिस प्रकार मनुष्य ने भिन्न-भिन्न प्रकार के आभूषणों का प्रयोग किया है, उसी प्रकार उसने भाषा को सुन्दर बनाने के लिए अलंकारों की योजना की। अपनी बात को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए चमत्कार अथवा रमणीयता का आश्रय लेना पड़ता है, उसी प्रकार काव्य को सुन्दर बनाने के लिए चमत्कार का आश्रय लेना पड़ता है। यही चमत्कार काव्य में 'अलंकार' कहलाता है। अतः हम कह सकते हैं कि अलंकार मनुष्य के मनोवेगों को चमत्कारी रूप में प्रकट करने का एक साधन है।

व्याख्या भाव की आलोचना प्र
गुण है। 'हडसन' ने लिखा है - "आलोच
आलोचक आलोच्य वस्तुओं की समझाने के
उसकी व्याख्या करने के लिए जितना उ
रहता है उतना उसके गुण-दोषों के लिए नहीं
व्याख्यात्मक आलोचना में न तो प्रभाववा
समीक्षा की तरह व्यक्तिगत रुचि के सहारे प्र
ग्रहण किया जाता है और न निर्णयात्मक
की शैली को ही अपनाया जाता है। व्या
आलोचना नियमों को परिवर्तनशील मान
इस परिवर्तनशीलता के कारण निर्णयात्मक
से इसका मतभेद हो जाता है। हिन्
'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल', 'श्याम सु
और 'आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
आलोचना प्रकार में विश्वास रखते
कुल मिलाकर यही कहा जा सकता
व्याख्यात्मक आलोचना पद्धति सा
वास्तविकताओं की व्याख्या कर

इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि "अलंकार वाणी के विभूषण है। इनके द्वारा अभिव्यक्ति में स्पष्टता, भावों में प्रभावोत्पादकता और प्रेषणीयता तथा भाषा में सौंदर्य का सम्पादन होता है। स्पष्टता और प्रभावोत्पादन के हेतु वाणी अलंकार का स्वयं धारण करती है। इसलिए काव्य में महत्वपूर्ण स्थान है।" वाणी को अलंकृत करना ही अलंकारों का ध्येय है। काव्य में अलंकारों का वही स्थान है जो शरीर के लिए लौकिक आभूषणों का।

अलंकार शब्द की व्युत्पत्ति एवं लक्षण

अलंकार शब्द की रचना 'अलं' तथा 'कृ' धा से हुई है, इस अलंकार शब्द का अर्थ है — 'सजावट'। 'अलं' का अर्थ है भूषण अर्थात जो अलंकृत करे वह अलंकार है — अलंकरोतीति अलंकारः'। 'आचार्य वामन' ने अलंकार को सौंदर्य का पर्यायवाची माना है। उनका कथन है — "काव्यं ग्राह्यमलंकारात्। सौंदर्यमलंकारः। उनका स्पष्ट आशय है कि अलंकार गुणों

का उत्कर्ष करते हैं। स्वयं काव्य के साध्य न होकर वे साधन हैं।

आचार्यों की अलंकार विषयक मान्यता भिन्न-भिन्न है। परिणामस्वरूप परवर्ती काल में काव्यशास्त्रियों का एक पक्ष काव्य के लिए अलंकारों को अनिवार्य मानता है और दूसरा पक्ष गौण। आचार्य मम्मट रसवादी आचार्य हैं, वे अलंकारों का उद्देश्य रस को पुष्ट करना मानते हैं। रीतिकालीन आचार्य केशवदास ने लिखा है —

'जदपि सुजाति सुलच्छनी सुबरन सरस सुवृत्त।
भूषण बिन न विराजई कविता बनिता मित्त॥'

किन्तु ध्वनि सिद्धान्त की प्रतिष्ठा होने पर काव्य में अलंकारों की नितान्त आवश्यक अथवा अपरिहार्य नहीं र[...] आचार्य विश्वनाथ ने मम्मट और आनन्द[...] से प्रेरणा प्राप्त कर अलंकार का स्वरूप स्पष्ट करते हुए लिखा है — अलंकार श[ब्द] और अर्थ का अस्थिर धर्म है। वे अलंकार[...] को केयूर की भाँति शोभावर्द्धक तथा [...]

रूप आत्मा का उपकारक मानते हैं। आचार्य विश्वनाथ के इस मन्तव्य का आशय यह है कि 'अलंकार काव्य के अनिवार्य गुण नहीं हैं। वे अस्थायी धर्म हैं।' 'काव्य-शोभा अलंकार पर निर्भर नहीं है, वह शोभा का कर्त्ता होकर शोभा की वृद्धि करता है। काव्य का सौंदर्य 'रस' है। इस मान्यताओं की स्थापना ध्वनिवादी आचा... ने की।

हिन्दी में अधिकांश आचार्यों ने इस विषय में संस्कृत के आचार्यों का अनुकरण किया ... 'आचार्य केशव' अलंकारहीन कविता के अस्तित्व ... स्वीकार नहीं करते।

'देव' अलंकृत काव्य को उत्कृष्ट मानते हैं

"कविता कामिनी सुखद पद, सुबरन सरस सुजा...
अलंकार पहिरे अधिक अद्भुत रूप लख...

आधुनिक आचार्यों में 'डॉ० रा... कुमार' ने अलंकार के कथन को रोचक ... प्रभावपूर्ण प्रणाली माना है। 'मैं अलंकार को ... वर्णन प्रणाली मात्र समझता हूँ, जिसके अन्त... चाहे किसी वस्तु का वर्णन किया जा सकत...